मेरे माँ और पिताजी

को

समर्पित

संस्तुति पत्र

मैं संस्तुति करता हूँ कि इस लघु शोध-प्रबंध को परीक्षा हेतु अग्रेषित किया जाए।

कोल्हापुर

दिनांक : 30 JUN 1999

अध्यक्ष
हिन्दी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर।

डॉ.अर्जुन गणपति चव्हाण
एम.ए.,बी.एड.,पीएच.डी.
अधिव्याख्याता,(वरिष्ठ श्रेणी) हिन्दी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर

प्रमाणपत्र

मैं प्रमाणित करता हूँ कि मीना ज्ञानदेव जाधव ने मेरे निर्देशन में ``मन्नू भंडारी की कहानियों में नारी संवेदना`` लघु शोध-प्रबंध शिवाजी विश्वविद्यालय,कोल्हापुर की एम्.फिल. (हिन्दी) उपाधि के लिए सफलतापूर्वक एवं पूरे परिश्रम के साथ लिखा है। यह उनकी मौलिक रचना है। जो तथ्य इस लघु शोध-प्रबंध में प्रस्तुत किए गए हैं, मेरी जानकारी के अनुसार सही हैं। शोध-छात्रा के प्रस्तुत शोधकार्य के बारे में मैं पूरी तरह संतुष्ट हूँ।

कोल्हापुर

दिनांक : 30.06.1999

डॉ.अर्जुन गणपति चव्हाण
शोध-निर्देशक

प्रख्यापन

यह लघु शोध-प्रबंध मेरी मौलिक रचना है जो एम्.फिल.(हिन्दी) की उपाधि के लिए प्रस्तुत की जा रही है। यह रचना इससे पहले इस विश्वविद्यालय या अन्य किसी भी विश्वविद्यालय की किसी भी उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गई है।

कोल्हापुर

दिनांक : 30-6-99

(मीना ज्ञानदेव जाधव)
शोध-छात्रा

प्राक्कथन

हिन्दी साहित्य जगत में कहानी विधा का स्थान अग्रणी है। साहित्य के क्षेत्र में काव्य को छोड़कर उपन्यास , नाटक आदि विधाएँ उन्नीसवीं सदी के मध्य में उपजी हैं। परंतु कहानी लिखित रूप से पहले ही व्यवहारिक रूप में मानव के विकास साथ-साथ ही शुरू हो चुकी थी।

कहानी विधा में मन्नू भंडारी सिद्‌हस्त रचनाकार हैं। स्वातंत्रोत्तर कथा साहित्य के विकास में मन्नू भंडारी ने महत्त्वपूर्ण योगदान किया है। `नई कहानी` की एक महत्त्वपूर्ण लेखिका के रूप में उन्हें जाना जाता है। मन्नू भंडारी ने कहानी के अलावा नाटक और उपन्यास भी लिखे हैं। परंतु उनकी रूचि कहानी लेखन में अधिक रही । इसीलिए उन्होंने कहानी विधा में अधिक सफलता पाई है।

मन्नू भंडारी की सशक्त कहानी `अकेली` को जब मैंने टी. वी. पर चित्रात्मक रूप में देखा था, तब मेरी उम्र ग्यारह-बारह साल की रही होगी। मन्नू जी की इस प्रभावशाली कहानी ने मेरी उस छोटी-सी उम्र को भी प्रभावित किया था। इतनी प्रसिद्‌ध और उच्च परिवार में रहनेवाली मन्नू भंडारी एक साधारण, वृद्‌ध स्त्री की व्यथा को इतनी गहराई और प्रभावशाली ढंग से कैसे अंकित कर सकती हैं? यह सवाल बार-बार मुझे परेशान करता रहा। जब मुझे एम् . फिल. करने का मौका मिला तो इसी प्रश्न को समझने और जानने का अवसर मैंने जाने नहीं दिया। नारी के प्रति मन्नू जी की जो संवेदनाएँ हैं, वे उन्होंने अपनी कहानियों में सशक्त रूप से चित्रित की हैं। इसी कारण मैंने एम् . फिल. की उपाधि के लिए प्रस्तुत विषय का चयन किया। मन्नू भंडारी की कहानियों पर शोध कार्य आरंभ करते समय मेरे सामने जो प्रश्न उपस्थित हुए, वे इस प्रकार हैं -

1. मन्नू भंडारी का व्यक्तित्त्व एवं कृतित्त्व कैसा है ?

2. मन्नू भंडारी की कहानियों के मूल विषय कौन से हैं ?

3. विवेच्य कहानियों में नारी संवेदना के किन स्तरों का चित्रण है ?

4. विवेच्य कहानियों में नारी संवेदना के किन रूपों का चित्रण मिलता है ?

5. विवेच्य कहानियों में नारी की किन समस्याओं पर प्रकाश डाला है ?

6. मन्नू भंडारी ने अधिकतर नारी पात्रों का ही चित्रण क्यों किया है ?

इन सभी प्रश्नों के जो उत्तर प्राप्त हुए उन्हें प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध के उपसंहार में दिया गया है।

अध्ययन की सुविधा के लिए मैंने अपने लघु शोध प्रबंध को निम्नलिखित अध्यायों में विभाजित कर अपने विषय का विवेचन किया है।

प्रथम अध्याय `मन्नू भंडारी के व्यक्तित्त्व और कृतित्त्व का समान परिचय` में मन्नू जी की जीवन यात्रा का चित्रण किया गया है। इसमें उनका जन्म, शिक्षा, पारिवारिक जीवन आदि का विवेचन है। जीवन यात्रा के साथ उनकी रचनाएँ, रचनाओं का प्रकाशन तथा प्रकाशन वर्ष का विवरण दिया गया है। अध्याय के अंत में प्राप्त निष्कर्ष दिया है।

द्वितीय अध्याय `विवेच्य कहानिया: विषयगत विवेचन` में मन्नू भंडारी की कहानियों का विषयानुसार वर्गीकरण किया गया है। उनकी कहानियाँ किस विषय से संबंधित हैं, इसे प्रस्तुत किया है। अध्याय के अंत में प्राप्त निष्कर्ष दर्ज है।

तृतीय अध्याय `विवेच्य कहानियों में नारी संवेदना के विविध स्तरों का चित्रण` में मन्नू भंडारी की कहानियों के आधार पर नारी जिन विविध स्तरों पर जीवन व्यतीत करती है, इसका चित्रण किया गया है। तत्पश्चात् जो निष्कर्ष प्राप्त हुए, वे अध्याय के अंत में प्रस्तुत हैं।

चतुर्थ अध्याय `विवेच्य कहानियों में नारी संवेदना के विविध रूप` में नारी के विविध रूपों के चित्रण का विवेचन किया है। नारी के ये रूप विशेषता तथा रिश्तों के आधार पर प्राप्त हैं जिनका विवेचन विस्तृत रूप से किया गया है। अध्याय के अंत में प्राप्त निष्कर्ष दर्ज किए गए हैं।

पंचम अध्याय `विवेच्य कहानियों में प्रतिबिंबित नारी समस्याएँ' में नारी के सम्मुख आनेवाली उन समस्याओं का चित्रण किया गया हैं, जो मन्नू भंडारी की कहानियों में चित्रित है। तत्पश्चात प्रस्तुत अध्याय के विवेचन का निष्कर्ष दे दिया है।

अंत में **उपसंहार** दिया है जिसके अन्तर्गत सभी अध्यायों के निष्कर्षों को सार रूप में प्रस्तुत किया गया है। तत्पश्चात आधार ग्रंथ तथा **संदर्भ-ग्रंथ सूची** के लिए उपयुक्त पुस्तकों की सूची दी गई है।

इस शोध कार्य को संपन्न करने में जिन ज्ञात-अज्ञात देवियों और सज्जनों का सहयोग और आशिर्वाद मिला उनका यहाँ ऋण निर्देश करना मैं अपना परम कर्तव्य समझती हूँ।

मैं सर्वप्रथम अपने आदरणीय गुरूवर्य डॉ. अर्जुन चव्हाण के प्रति कृतज्ञ हूँ जिनके अमूल्य मार्गदर्शन में मैं अपना शोष कार्य पूरा कर सकी। गुरू के साथ-साथ एक शुभचिंतक के रूप से भी आपने मुझे प्रेरित , प्रोत्साहित किया, मेरी अनेक समस्याओं को हल किया। आपके कारण मेरी अनेक बाधाएँ हल हुई। आपका यह आत्मीयता पूर्ण स्वभाव मुझे जीवनभर याद रहेगा जिससे मैं आजीवन कृतज्ञ हूँ।

मेरे माता-पिता और बड़े भाई-बहन के आशिर्वाद और सदिच्छा के कारण ही मैं अपना शोधकार्य बिना अवरोध पूरा कर सकी। मेरे पति श्री रमेश ठोकले के प्रति मैं विशेष रूप से कृतज्ञ हूँ। साथ ही मेरे गुरू डॉ. बाबासाहेब पोवार जिन्होंने मुझे पूर्व छात्रा होते हुए भी सहकार्य किया। मेरे भाई अध्यापक अरूण कांबळे ने मुझे समय-समय पर उचित परामर्श देकर मेरा हौसला बढ़ाया। शिवाजी विश्वविद्यालय के ग्रंथालय के उन सभी कर्मचारियों के प्रति मैं कृतज्ञ हूँ जिन्होंने मुझे प्रत्यक्ष- अप्रत्यक्ष रूप से मदद की। महावीर महाविद्यालय के ग्रंथपाल पी.डी. कदम तथा कर्मचारी डी.एस. कांबळे ने मेरे आग्रह को कभी नहीं नकारा। महावीर महाविद्यालय के अध्यापक शैलेन्द्र सडोलीकर जी ने मुझे अपने नाम से पुस्तके लेने की आज्ञा देकर मेरी कठिनाइयाँ दूर की। मेरी सहेली अंजना कडलगे से मुझे अनमोल मदद मिली। उसने मेरा हर तरह का ख्याल रखा। मुझे समय-समय पर प्रोत्साहित किया। अध्यापिका श्रीमति एम. एस्. जाधव जी ने मेरी पुस्तक की माँग को पूरा करके मुझे सहयोग दिया। प्रस्तुत शोध कार्य का टंकलेखन सुचारूरूप से करने वाले श्री. मिलींद भोसले जी की मैं आभारी हूँ। अंत में एक बार फिर मैं इन सभी को मनपूर्वक

धन्यवाद देती हूँ। अंत में उन ज्ञात, अज्ञात व्यक्तियों जिनका प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष सहकार्य मेरे लिए अमूल्य सिद् ध हुआ, मैं हृदय से आभार प्रकट करती हूँ और इस लघु शोध-प्रबंध को विद्वानों के समक्ष परीक्षणार्थ अत्यंत विनम्रता से प्रस्तुत करती हूँ।

शोध कार्य की मौलिकता :-

1. इसमें मन्नू जी कहानियों में नारी पात्रो का ही गहराई से अध्ययन करके नारी के प्रत्येक पक्ष को चित्रित किया गया है।

2. प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध में मन्नू भंडारी की कहानियों में चित्रित नारी के विविध रूपों का चित्रिण विशेषता के तथा रिश्तों के आधार पर सूक्ष्मता से किया गया है।

3. नारी जिन विविध स्तरों में जीवन व्यतीत करती है, उसका विवेच्य कहानियों के आधार पर बारीकी से विवेचन किया गया है।

4. विवेच्य कहानियों में लेखिका की केवल स्त्रियों के प्रति ही संवेदना परिलक्षित नहीं हुई है, बल्कि पुरूषों के प्रति भी उनकी संवेदना थोड़ी-बहुत मात्रा में अवश्य दिखाई देती है। इसीलिए उन्हें केवल नारी विषयक लिखनेवाली लेखिका मानना गलत होगा।

कोल्हापुर — शोध छात्रा

30जून, 1999 — (मीना जाधव)